

①

Prof. Pankaj Kr. Gupta
Assistant Professor (Eco)
R.B.G.R. College, Maharajganj

TDC-I Micro Eco.
Paper-I Eco(Hons.)
Module-V Wages

Topic - Modern theory of Wages Determination -

Wages Determination under Perfect Competition - I

मजदूरी निर्धारण का आधुनिक सिद्धांत - पूर्ण प्रतियोगिता में मजदूरी निर्धारण

मजदूरी श्रम सेवाओं का मूल्य है। अतः आधुनिक अर्थशास्त्रियों का मत है कि श्रम का मूल्य भी अन्य वस्तुओं की तरह श्रम की माँग तथा पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होता है क्योंकि जिस प्रकार से किसी वस्तु की माँग व पूर्ति है, उसी प्रकार से बाजार में श्रम की माँग व पूर्ति है। मजदूरी का निर्धारण मूल्य के सामान्य सिद्धांत का ही एक विभिन्न रूप है। इस सिद्धांत का अध्ययन दो परिस्थितियों में किया जा सकता है -

- (1) पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत मजदूरी का निर्धारण
- (2) अपूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत मजदूरी का निर्धारण

(1) पूर्ण प्रतियोगिता में मजदूरी का निर्धारण

आधुनिक सिद्धांत के अनुसार किसी एक उद्योग में मजदूरी की दर उस बिन्दु पर निर्धारित होती है जहाँ पर श्रम का कुल माँग वक्र उसके

(2)

कुल शक्ति को कांता है।

इस सिद्धांत के अनुसार श्रम के मूल्य निर्धारण का कुल पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि श्रम की माँग और शक्ति के निर्धारक तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त किया जाये।

श्रम के लिए माँग (Demand for Labour) — श्रम की माँग का दो भागों में अध्ययन किया जा सकता है —

- (1) फर्म के लिए श्रम की माँग
- (2) उद्योग के लिए श्रम की माँग
- (1) फर्म के लिए श्रम की माँग

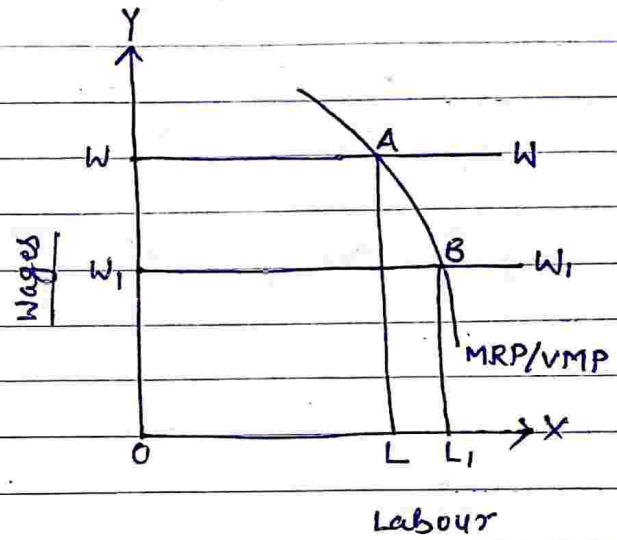
(Firm's Demand for Labour)

श्रम की माँग उत्पादक या फर्म इसलिये करते हैं कि श्रमिक उत्पादन करते हैं। अतः श्रम की माँग इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितना उत्पादन करता है। कोई भी उत्पादक श्रमिकों को उससे अधिक मूल्य नहीं देगा जितना कि श्रमिक उत्पाद के लिए पैदा करता है।

इसका अर्थ यह हुआ कि श्रम की माँग करते समय उत्पादक श्रम की सीमान्त उत्पादकता (MP) या सीमान्त उपज के मूल्य को श्रम की माँग अर्थात् मजदूरी की दर की अधिकतम सीमा कहा जा सकता है।

(3)

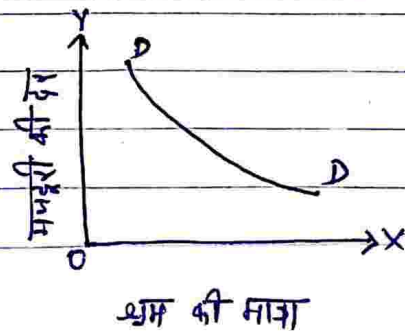
फर्म के लिए मजदूरी की माँग उनकी उत्पादकता पर निर्भर करती है इसलिए श्रम की सीमान्त उत्पादकता वक्र (MRP Curve) या सीमान्त उपज के मूल्य वक्र (VMP) फर्म की श्रम की माँग वक्र होगी। जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।



रेखाचित्र में जब मजदूरी की दर OW है तो OL श्रम की माँग की जाती है तथा जब मजदूरी की दर OW_1 हो जाती है तो OL_1 श्रम की माँग की जाती है। इसके फलस्वरूप फर्म MRP वक्र के A बिन्दु से B बिन्दु की ओर सरक जाती है। इस प्रकार MRP वक्र फर्म की माँग वक्र है।

उद्योग के लिए श्रम की माँग (Industry's Demand for Labour)

सभी फर्मों की श्रम की माँग मात्रा को जोड़कर उद्योग के लिए माँग मात्रा या माँग वक्र का पता लगाया जाता है।



श्रम की माँग तथा मजदूरी⁽⁴⁾ की दर में विपरीत सम्बन्ध होता है जिसके कारण श्रम का माँग बढ़ नीचे गिरता हुआ अर्थात् ऋणात्मक ढाल वाला होता है। मजदूरी की दर अधिक होने पर श्रम की माँग कम होगी और मजदूरी के नीचे होने पर श्रम की माँग अधिक होगी जैसा कि पिछले रेखाचित्र में दिखाया गया है।

श्रम की माँग अथवा माँग की लोच तीन तथ्यों द्वारा प्रभावित होती है -

(क) उत्पत्ति की तकनीकी दशा

(ख) वस्तु की माँग

(ग) उत्पत्ति के अन्य साधनों की कीमत

(क) उत्पत्ति की तकनीकी दशा (Technological Condition of Production) -

श्रम की माँग उत्पत्ति की तकनीकी दशाएँ अथवा कर्म की लागत और उत्पादन के सम्बन्ध द्वारा प्रभावित होती है। यदि स्थिर साधन और परिवर्तनशील श्रम के अनुपात तकनीकी दृष्टि से बढ़ते जा सकने वाले नहीं हैं तो श्रमिकों को अधिकाधिक काम पर लगाने से एक सीमा पश्चात् सीमान्त उत्पत्ति आय

(5)

कम होने लगती है। अतः साहसी उसी बिन्दु तक श्रमिकों को काम पर रखेगा जहाँ सीमान्त उत्पात्ति आय और श्रमिक का सीमान्त लागत व्यय बराबर हो जाता है।

(ख) वस्तु की माँग) — श्रम की माँग ज्युल्लति माँग होती है क्योंकि उपभोक्ता द्वारा उस वस्तु अथवा सेवा की माँग की जाती है जिसके उत्पादन में श्रम सहायक होता है। यदि श्रमिकों द्वारा उत्पादित वस्तु की माँग कम होगी तो श्रमिकों की माँग भी कम होगी।

(ग) उत्पात्ति के अन्य साधनों की कीमत — श्रम की माँग अथवा अन्य साधनों की कीमत तथा उसके साथ श्रम के प्रतिस्थापन की संभावनाएँ से भी अधिक प्रभावित होती है। यदि अन्य साधन (मशीन) महँगी हैं तो निश्चय ही इसके बदले में श्रम की अधिकाधिक इकाइयों का प्रयोग किया जाएगा और श्रम की माँग बढ़ जाएगी। इसके विपरीत, यदि अन्य साधन सस्ते होंगे तो श्रम की माँग भी कम होती है।

क्रमशः